विधाता, वरदाता-पन की स्टेज़

20.5.71

विधाता और वरदाता यह दोनों ही गुण अपने में अनुभव करते हो? जैसे बाप विधाता भी है और वरदाता भी है। वैसे ही अपने को भी दोनों ही प्राप्ति स्वरूप समझते हो? जितना-जितना वरदाता बनते जायेंगे उतना ही वरदाता बन वरदान देनेकी शक्ति बढ़ती जायेगी तो दोनों ही अनुभव होते हैं वा अभी सिर्फ विधाता का पार्ट है, अन्त में वरदाता का पार्ट होगा? क्या समझती हो? (कोई ने कहा दोनों पार्ट अभी चल रहे हैं, कोई ने कहा अभी एक पार्ट चल रहा है) वरदान किन आत्माओं को देते हो और वरदाता किसके लिए बनते हो? एक होता है नालेज को देना, दूसरा है वरदान रूप में देना। तो विधाता हो या वरदाता हो? किन्हों को वरदान देती हो? विधाता अर्थात् ज्ञान देने वाले तो बनते ही हो। लेकिन कहाँ विधाता के साथ-साथ वरदाता भी बनना पड़ता है। वह कब? जब कोई ऐसी आत्मा हिम्मतहीन, निर्बल लेकिन इच्छुक होती है, चाहना होती है कि हम कुछ प्राप्ति करें। ऐसी आत्माओं के लिए ज्ञान दाता बनने के साथ-साथ आप विशेष रूप से उस आत्मा को बल देने के लिए शुभ भावना रखते हो वा शुभ चिन्तक बनते हो। तो विधाता के साथ-साथ वरदाता भी बनते हो। एक्सट्रा बल अपनी तरफ से उनको वरदान के रूप में देते हो। तो वरदान भी देना होता और दाता भी बनना होता है। इसलिए दोनों ही हो। यह अनुभव कब किया है? भक्तिमार्ग में साक्षात्कार द्वारा वरदान प्राप्त होता है क्योंकि वह आत्माएं इतनी निर्बल होती हैं जो ज्ञान धारण नहीं कर सकती। स्वयं पुरुषार्थी नहीं बन सकती इसलिए वरदान की इच्छा रखती हैं। और वरदान रूप में उनको कुछ-न-कुछ प्राप्ति होती है। इस रीति जो कमज़ोर आत्माएं आप के सामने आती हैं जिन आत्माओं की इच्छा को देखकर तरस की, रहम की भावना आती है। रहमदिल बन अपनी सभी शक्ति की मदद दे उनको ऊंचा उठाना, यह है वरदान का रूप। अभी बताओ कि दोनों ही हो या एक? कोई आत्माओं के प्रति आप लोगों को विशेष प्रोग्राम भी रखने पड़ते हैं क्योंकि अपनी शक्ति से वह धारण नहीं कर पाते हैं। तो शक्ति का वरदान देने वाली शिव शक्तियां हो। इसलिए सुनाया कि अभी ज्यादा

सर्विस चलनी है— नालेज के विधातापन की। अन्त में नालेज देने की सर्विस कम हो जायेगी। वरदान देने की सर्विस ज्यादा होगी। इसलिए अन्त के समय वरदान लेने वाली आत्माओं में वही संस्कार मर्ज हो जायेंगे। और वही मर्ज हुए संस्कार द्वापर में भक्त के रूप में इमर्ज होंगे। तो अभी नालेज अर्थात् ज्ञान के दाता की सर्विस है। फिर वरदाता की होगी। समझा। फिर इतना समय ही नहीं होगा, न आत्मा में शक्ति होगी। इसलिए वरदाता बन वरदान देने की सर्विस होगी। अभी यह सर्विस कम करते हो फिर ज्यादा करनी होगी। अभी वारिस बनाने की सर्विस है फिर होगी सिर्फ प्रजा बनाने की सर्विस। परन्तु थोड़े समय में इतनी प्रजा बनाने के लिए वरदाता मूर्त्त बनने के लिए मुख्य क्या अटेन्शन रखना पड़े? वरदाता मूर्त्त बन थोड़े समय में अनेक आत्माओं को वरदान दे सकें, उसके लिए क्या करना पड़े? वरदाता बनने के लिए मुख्य पुरुषार्थ यही करना पड़े, बार-बार जो भक्तिमार्ग में गायन किया है कि वारी जाऊं। यह गायन अगर प्रैक्टिकल में कर लो तो जिसके ऊपर वारी जाते हो वह आपको भी सर्व वरदान देकर वरदाता मूर्त्त बना देते हैं। तो हर समय हर कर्म में हर संकल्प में यह सोचो कि 'वारी जाऊं' का जो वचन लिया था वह पालन कर रहीं हूँ। तो बाप वरदाता मूर्त्त है ना। आप सभी भी बाप समान वरदाता मूर्त्त बन जाते हो। तो इतनी चेकिंग करते हो? एक संकल्प भी किसके प्रति न हो जो भी संकल्प उठता है उसमें बाप के प्रति कुर्बान का, वारी जाने का रहस्य भरा हुआ हो। ऐसी चेकिंग करते रहो तो फिर माया सामना करने का साहस रख सकेगी? सामना करने का साहस नहीं रखेगी। लेकिन बार-बार नमस्कार कर विदाई लेगी। समझा।

तो ऐसा बनने के लिए इतनी चेकिंग चाहिए। और दूसरी बात वरदानी मूर्त्त बनने के लिए सर्व शक्तियों को अपने में देखना चाहिए कि इतना स्टॉक जमा किया है जो दूसरे को दे सकूं? अगर जमा ही नहीं किया होगा तो दूसरे को क्या देंगे! तो वरदानी मूर्त्त बनने के लिए सर्व शक्तियों को अपने में इतना जमा करना पड़े जो दूसरे को दे सकें। इतना जमा का खाता है? वा कमाया और खाया, यह रिजल्ट है। एक होता है कमाया और खाया। दूसरा होता है जमा करना और तीसरा होता है जो इतना भी नहीं कमा सकते जो स्वयं को भी चला सकें। दूसरे की मदद ले अपने को चलाना पड़ता। तो तीसरी स्टेज वा दूसरी स्टेज से पार हुए हो? वह है कमाया और खाया। और पहली स्टेज है जमा करना। तो रोज अपना बैंक बैलेन्स देखते हो? बहुत भिखारी भीख मांगने के लिए आयेंगे। तो इतना ही जमा करना पड़े जो सभी को दे सको। जमा करना सीखे हो? कितना जमा किया है। खाते से तो पता लग जाता है ना। अपना खाता देखा है? कई ऐसे भी होते हैं जो निकाल कर खाते जाते हैं मालूम नहीं पड़ता है। फिर जब अचानक खाता देखते हैं तो समझते हैं कि यह क्या हो गया! ऐसे तो यहाँ होंगे ही नहीं। अच्छा।

जमा किये हुए खाते वाले का विशेष गुण वा कर्त्तव्य क्या दिखाई देगा? जिसके पास खजाना जमा होगा उसकी सूरत से एक तो वर्तमान और भविष्य अर्थात् ईश्वरीय नशा और नारायणी नशा दिखाई देगा और उनके नयनों वा मस्तक से सर्व आत्माओं को स्पष्ट अपना नशा दिखाई देगा। यह जमा होने वाले की निशानी दिखाई देगी। उनकी सूरत ही सर्विसएबुल होगी। सूरत ही सर्विस करती रहेगी। जिसके पास जास्ती अथवा कम जमा होता है तो वह भी उनकी सूरत से दिखाई देता है। तो जमा किए हुए की सूरत वा मूरत से ही मालूम पड़ जाता है। जैसे जड़ चित्र

बनाते हैं तो उनमें भी कई ऐसे चिन्ह दिखाते हैं जो उन जड़ चित्रों से भी अनुभव होता है। वह बोलते तो नहीं है लेकिन सूरत वा मूर्त्त से अनुभव होता है। वैसे ही आपकी यह सूरत हर संकल्प हर कर्म को स्पष्ट करेगी। तो अपने आप को ऐसा चेक करो कि मेरी सूरत से कोई भी आत्मा को नशा व निशाना दिखाई देता है? जैसे कोई ऊंच कुल का बच्चा होता है तो वह भल गरीब बन जाये लेकिन उसकी झलक और फलक दिखाती है कि यह कोई ऐसे ऊंच कुल का है। वैसे ही जो सदैव खज़ाने से सम्पन्न होगा उसकी सूरत से कभी छिप नहीं सकता। आपके पास दर्पण है? सदैव साथ रखते हो? हर समय दर्पण देखते रहते हो? कई ऐसे भी होते हैं जिनको बार-बार दर्पण देखने की आवश्यकता भी नहीं होती है। तो आप सेकेण्ड-सेकेण्ड देखते हो वा देखने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती? जब तक अपनी चेकिंग का नेचुरल अभ्यास हो जाये तब तक बार-बार चेकिंग करनी पड़ती है। धीरे-धीरे फिर ऐसे बन जायेंगे जो बार-बार देखने की भी दरकार नहीं पड़ेगी। सदैव सजे सजाये ही रहेंगे। जब तक यह सदैव सजे सजाये रहने की आदत पड़ जाये तब तक बार-बार अपने को देखना और बनाना पड़ता है। जब दो-चार बार देख लिया कि जब माया किसी भी प्रकार से किस भी रीति से मेरे श्रृंगार को बिगाड़ नहीं सकती। फिर बार-बार देखने की ज़रूरत ही नहीं। फिर तो अपना साक्षात्कार दूसरों के द्वारा भी आपको होता रहेगा। दूसरे स्वयं वर्णन करेंगे। गुण गान करेंगे। अच्छा।

सभी विजयी रत्न हो ना? विजयी रत्न तो हो लेकिन विजय की माला कितनी अपने गले में डाली है, वह भी देखना पड़े। यह विजय की माला दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है। तो बढ़ रही है और कहाँ तक बड़ी है यह भी देखना पड़े। जब माला लम्बी होती है तो फिर क्या करते हैं? डबल करके डालते हैं। जिससे सारा श्रृंगार सुन्दर बन जाता है। तो इतनी बड़ी माला अपने गले में डाली है? यह भी चेक करो कि आज के दिन मेरे विजय की माला में कितने विजयी रत्न बढ़े। अच्छा।

दृष्टि से सृष्टि बदलती है —यह भी अभी कहावत है। कैसी भी तमोगुणी वा रजोगुणी आत्मायें आयें लेकिन आपकी सतोगुणी दृष्टि से उनकी सृष्टि, उनकी स्थिति बदल जाये। उनकी वृत्ति बदल जाये। आगे चलकर यह अनुभव बहुत आत्मायें करेंगी। जैसे यादगार दिखाया हुआ है कि तीनों लोकों का साक्षात्कार कराया। यह भी अभी का गायन है। आप लोगों के सामने आने से दृष्टि द्वारा उन्हों को तीन लोक तो क्या अपनी पूरी जीवन कहानी का मालूम पड़ जाये। जैसे शुरू स्थापना के समय ज्ञान की सर्विस इतनी नहीं थी। नज़र से निहाल करते थे। तो अन्त में भी ज्ञान की सर्विस करने का मौका नहीं मिलेगा। जो आदि हुआ है वही अन्त में आप लोगों द्वारा चलना है। जैसे वृक्ष का पहले बीज प्रत्यक्ष रूप में होता है बीच में वह बीज मर्ज हो जाता है फिर अन्त में वही बीज प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता है। तो आप आदि आत्माओं में भी जो पहला फाउन्डे-शन पड़ा हुआ है वही सर्विस अन्त में भी होनी है। अच्छा।

पोज़ीशन में ठहरने से अपोज़ीशन समाप्त २४.५.७१

सर्व आत्माओं के सुख और शान्ति कर्त्ता बने हो? क्योंकि दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता के सिकीलधे बच्चे हो तो जो बाप का कर्त्तव्य वही बच्चों का कर्त्तव्य। जो विश्व के कल्याणकर्त्ता वा सुखकर्त्ता हैं उनके पास कभी भी दु:ख की लहर स्वप्न में भी अथवा संकल्प में भी आ नहीं सकती। तो

ऐसी स्थिति बना रहे हो वा इस स्थिति में स्थित रहते हो। जब से नया जन्म लिया, बापदादा के सिकीलधे बच्चे बने, तो सर्व शक्तिवान की सन्तान के पास कोई भी प्रकार का सन्ताप आ नहीं सकता। सन्ताप अर्थात् दु:ख की लहर तब तक है जब तक सर्वशक्तिवान बाप की स्मृति नहीं रहती अथवा उनकी सन्तान प्रैक्टिकल में नहीं बनते हैं। सुख के सागर बाप की सन्तान तो दु:ख की लहर क्या वस्तु होती है, इससे भी अन्जान रहते हैं। सुख की लहर में ही लहराते रहते हैं। माया की अपोज़ीशन क्यों होती है? अपोजीशन का निवारण बहुत सहज है। अपोज़ीशन से सिर्फ अ शब्द निकाल दो। तो क्या हो जायेगा? पोजीशन में ठहरने से अपोज़ीशन होगा? अगर अपने पोज़ीशन पर स्थित है तो माया की अपोज़ीशन नहीं होगी। सिर्फ एक शब्द कट कर देना है। अपने पोज़ीशन में ठहरना यही याद की यात्रा है। जो हूँ, जिसका हूँ उसमें स्थित होना — यही याद की यात्रा है। मुश्किल है क्या? जो जैसा है ऐसा अपने को मानने में मुश्किल होता है क्या? आप लोगों ने असलियत को भुला दिया है, उसमें स्थित कराने की ही शिक्षा मिली है। तो असली रूप में ठहरना मुश्किल होता है वा नकली रूप में ठहरना मुश्किल होता है? होली के अथवा दशहरे के दिनों में छोटे बच्चे आर्टीफिशियल नकाब पहनते हैं, उन्हों को कहो कि यह नकली नकाब उतार असली रूप में हो जाओ तो क्या मुश्किल होगा? कितना समय लगेगा? आप लोगों ने भी यह खेल किया है ना। क्या-क्या नकाब धारण किये? कब बन्दर का, कब असुर का, कब रावण का। कितने नकली नकाब धारण किये हैं? अब बाप क्या कहते हैं? वह नकली नकाब उतार दो। इसमें क्या मुश्किल है? तो सदैव यह नशा रखो कि असली स्वरूप, असली धर्म, असली कर्म हमारा कौन-सा है? असली नालेज के हम मास्टर नालेजफुल हैं यह नशा कम है? यह नशा सदैव रहे तो क्या बन जायेंगे? जो बन जायेंगे उसका यादगार देखा है? दिलवाला मन्दिर है तपस्वी कुमार और तपस्वी कुमारियों का यादगार। और सदैव नशे में स्थित रहने का यादगार कौन-सा है? अचलघर। सदैव उस नशे में रहने से अचल, अड़ोल बन जायेंगे। फिर माया संकल्प रूप में भी हिला नहीं सकती। ऐसे अचल बन जायेंगे। यादगार है ना कि रावण सम्प्रदाय ने पांव हिलाने की कोशिश की लेकिन जरा भी हिला न सके। ऐसा नशा रहता है कि यह हमारा यादगार है या समझते हो कि यह बड़े-बड़े महारथियों का यादगार है? यह मेरा यादगार है, ऐसा निश्चय बुद्धि बनने से विजय अवश्य प्राप्त हो जाती है। यह कभी भी नहीं सोचो कि यह कोई और महारथियों का है, हम तो पुरुषार्थी हैं। अगर निश्चय में, स्वरूप की स्मृति में ही कमज़ोरी होगी तो कर्म में भी कमजोरी आ जायेगी। तो सदैव हर संकल्प निश्च-यबुद्धि का होना चाहिए। कर्म करने के पहले यह निश्चय करो कि विजय तो हमारी हुई पड़ी है। अनेक कल्प विजयी बने हो। जब अनेक कल्प, अनेक बार विजयी बन विजय माला में पिरोने वाले, पूजन होने वाले बने हो तो अब वह रिपीट नहीं करेंगे? वही बना हुआ कर्म दुबारा रिपीट करना है। इसलिए कहा जाता है कि बना बनाया....। बना हुआ है लेकिन अब फिर से रिपीट कर 'बना बनाया' जो कहावत है उसको पूरा करना है। जब निश्चय हो जाता है कि मैं यह हूँ वा यह मुझे करना ही है, मैं कर सकता हूँ तब वह नशा चढ़ता है। निश्चय नहीं तो नशा भी नहीं चढ़ता और निश्चय है तो नशे की स्थिति के सागर में लहराते रहेंगे। ऐसे स्थिति का अनु-भवी मूर्त्त जब बन जायेंगे तो आपकी मूर्त्त से सिखलाने वाले की सूरत दिखाई देगी। तो ऐसे

अनुभवीमूर्त्त हो जो बाप और शिक्षक की सूरत आपकी मूर्त्त से प्रत्यक्ष हो। ऐसे बने हो वा बन रहे हो? सफलता के सितारे हो वा उम्मीदवार सितारे हो। सफलता तो जन्मसिद्ध अधिकार है। क्योंकि जब सर्वशक्तिवान कहते हो तो असफलता का कारण है शक्तिहीनता। शक्ति की कमी के कारण माया से हार खाते हैं। जब सर्वशक्तिवान बाप की स्मृति में रहते हैं तो सर्वशक्तिवान के बच्चे होने के कारण सफलता तो जन्मसिद्ध अधिकार हो गया। हर सेकेण्ड में सफलता समाई हुई होनी चाहिए। असफलता के दिन समाप्त। अब सफलता हमारा नारा है — यह स्मृति में रखो।

बहुत सहज सरल रास्ता है। जो सेकेण्ड में अपने को नकली से असली बना सकते हो? इतना सरल मार्ग कब मिलेगा? कभी भी नहीं? माया के अधीन क्यों बनते हो? क्योंकि आलमाइटी अथॉर्टी के बच्चे हैं यह भूल जाते हो। आजकल छोटी-मोटी अथॉर्टी रखने वाले कितनी खुमारी में रहते हैं। तो आलमाइटी अथॉर्टी वाले कितनी खुमारी में रहने चाहिए? शास्त्रवादी जो अपने को शास्त्रों की अथॉर्टी मानते हैं वह भी कितनी खुमारी में, कितना उल्टी नालेज के निश्चय में रहते हैं। किसने सुनाया, किसने देखा, कुछ भी पता नहीं। फिर भी शास्त्रों की अथॉर्टी मानने के कारण अपनी हार कभी नहीं मानेंगे। तो आप लोगों की सर्व से श्रेष्ठ अथॉर्टी है। ऐसे अथॉर्टी से किसके भी सामने जाओ तो सभी सिर झुकायेंगे। आप लोग नहीं झुक सकते। तो अपनी अथॉर्टी को कायम रखो। आप विश्व को झुकाने वाले हो। जो विश्व को झुकाने वाले हैं वह किसके आगे झुक नहीं सकते। उस अथॉर्टी की खुमारी से किसी भी आत्मा का कल्याण कर सकते हो। ऐसी खुमारी को कभी भी भूलना नहीं। बहुत समय से अभुल बनने से भविष्य बहुत समय के लिए राज्य भाग्य प्राप्त करेंगे। अगर अल्प काल इस खुमारी में रहते हैं तो राज्य भाग्य भी अल्पकाल के लिए प्रापत होता है। यहाँ तो अभी आये हो सदा काल का वरसा लेने न कि अल्पकाल का। सिर्फ दो बातें साथ-साथ याद रखो। बात एक ही है शब्द भिन्न-भिन्न हैं। बिल्कुल सहज से सहज दो बातें सरल शब्दों में कौन सी सिखाई जाती हैं? ऐसे दो-दो शब्द साथ याद रहें तो स्थिति कभी नीचे ऊपर नहीं हो सकती। अल्फ और बादशाही याद रहे तो कभीस्थिति नीचे ऊपर नहीं होगी। दो शब्दों की ही बात है। कोई अन्जान बच्चे को भी अलफ और बे याद करने के लिए कहो तो भूलेगा? आप मास्टर सर्वशक्तिवान भूल सकते हो? जिस समय विस्मृति की स्थिति होती है तो अपने से यह बातें करो मैं मास्टर सर्वशक्तिवान अलफ और बे को भूल गया! ऐसी-ऐसी बातें करने से शक्ति जो खो देते हो उसकी फिर से स्मृति आ जायेगी। है सिर्फ मनन और वर्णन करना। पहले मनन करो और बाद में फिर वर्णन करो। जो बातें मनन की जाती हैं उनको वर्णन करना सहज हो जाता है। तो मनन करते और वर्णन करते चलो। यह भी दो बातें हुई। मनन करते-करते मग्न अवस्था आटोमेटीकली हो जायेगी। जो मनन करना नहीं जानते वह मग्न अवस्था का भी अनुभव नहीं कर सकते। ताज और तख्तनशीन अभी बने हो वा भविष्य में बनेंगे? अभी तो ताज और तख्त नहीं है ना? बेगर हो? संगमयुग का तख्त नहीं जानते हो? सारे कल्प के अन्दर सभी से श्रेष्ठ तख्त का मालूम नहीं है? बापदादा के दिल रुपी तख्त नशीन नहीं बने हो? जब याद रहेगा तब तो बैठेंगे। तख्त है तो ताज भी होगा। ताज बिना तख्त तो होगा ही नहीं। कौन-सा ताज धारण करने से तख्त नशीन बनेंगे? बापदादा संगम पर ही ताज व

तख्तनशीन बना देते हैं। इस ताज और तख्त के आधार से भविष्य ताज तख्त मिलता है। अभी धारण नहीं करेंगे तो भविष्य में कैसे धारण करेंगे। आधार तो संगमयुग है ना। ताज भी धारण करना पड़े, तिलक भी धारण करना पड़े और तख्तनशीन भी बनना पड़े। तिलक सदैव कायम रहता है वा कभी-कभी मिट जाता है? ताज, तिलक और तख्त यह तीनों ही संगमयुग की बड़ी से बड़ी प्राप्ति है। इस प्राप्ति के आगे भविष्य राज्य कुछ भी नहीं। जिसने संगमयुग का ताज तख्त नहीं लिया उसने कुछ भी नहीं लिया। विश्व के कल्याण के ज़िम्मेवारी का ताज है। जब तक यह ताज धारण नहीं करते तब तक बाप के दिल रूपी तख्त पर विराजमान नहीं हो सकते। अपना हक जमा करके जाना, नहीं तो बड़ा मुश्किल होगा। मधुबन में ताज व तख्तनशीन बनकर जाना। जब हिम्मतवान, निश्चय बुद्धि बनते हो तब ही तो मधुबन में आते हो अपनी ताजपोशी करने। बिगर ताज के नहीं जाना। बापदादा का तख्त इतना बड़ा है जो जितना भी चाहें उतना विराजमान हो सकते हैं। उस स्थूल तख्त पर तो सभी नहीं बैठ सकते। लेकिन यह तख्त इतना बड़ा है। बड़े से बड़े बाप के बच्चे, बड़े से बड़े तख्तनशीन होते हैं। अच्छा।